لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿92﴾

९२. जब तक तुम अपनी पसंदीदा माल से अल्लाह (तआला) की राह में न ख़र्च करोगे, कभी भी भलाई न पाओगे और जो कुछ तुम ख़र्च करो उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿93﴾

९३. तौरात उतरने से पहले ही (हज़रत) याक़ूब (عليه السلام) ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था उस के सिवाय सभी खाने इस्राईल की औलाद के लिए हलाल थे। आप कह दीजिए कि अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और पढ़ सुनाओ।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿94﴾

९४. उस के बाद भी जो लोग अल्लाह (तआला) पर झूठा बुहतान लगायें वही जालिम हैं।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۣ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿95﴾

९५. कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) सच्चा है, तुम सभी इब्राहीम हनीफ़ की मिल्लत की पैरवी करो, जो मूर्तिपूजक न थे।

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿96﴾

९६. बेशक (अल्लाह तआला) का पहला घर जो लोगों के लिये बनाया गया, वही है जो मक्का (नगरी) में है जो पूरी दुनिया के लिये मुबारक और हिदायत है।

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۭ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۭ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿97﴾

९७. जिस में वाज़ेह निशानियाँ हैं, "मुक़ामे इब्राहीम" (एक पत्थर है जिस पर खाना कअबा की तामीर के वक़्त हज़रत इब्राहीम खड़े होते थे) इस में जो आ जाये बेख़ौफ़ हो जाता है। अल्लाह (तआला) ने उन लोगों पर जो उस की तरफ़ राह पा सकते हों, उस घर का हज्ज ज़रूरी कर दिया है।[1] और जो कोई कुफ़्र करे, तो अल्लाह

---

[1] "रास्ता पा सकते हों" का मतलब यह है कि रास्ते के ख़र्च का इंतेज़ाम हो, यानी इतना माल हो कि रास्ते का ख़र्च आसानी से पूरा हो जाये, इस के सिवाय इंतेज़ाम से मुराद यह भी है कि रास्ते में अमन हो और जान व माल महफ़ूज़ हो। इसी तरह यह भी ज़रूरी है कि सेहत सफ़र

The Ummah Technology Mission

(तआला) पूरी दुनिया से बेनियाज़ है।[1]

قُلْ يَاأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

९८. आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इंकार क्यों करते हो? और जो कुछ करते हो अल्लाह (तआला) उस पर गवाह है।

قُلْ يَاأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾

९९. उन अहले किताब से कह दीजिए कि तुम अल्लाह (तआला) की राह (धर्म) से जो ईमान लाये हैं उन्हें क्यों रोकते हो और उस में बुराई ढूँढ़ते हो, जबकि तुम ख़ुद गवाह हो? और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों से अंजान नहीं।

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

१००. ऐ ईमानवालो! अगर तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बातें मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें कुफ़्र की तरफ़ फेर देंगे।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ۗ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾

१०१. और (यानी यह वाज़ेह है) तुम किस तरह कुफ़्र कर सकते हो? जबकि तुम पर अल्लाह (तआला) की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में रसूल (ﷺ) मौजूद हैं, और जो अल्लाह (तआला) के दीन को मजबूती से पकड़ ले बेशक उसे सीधा रास्ता दिखा दिया गया है।

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

१०२. ऐ ईमानवालो! अल्लाह से उतना डरो जितना उस से डरना चाहिए और (देखो) मरते दम तक मुसलमान ही रहना।

के लायक़ हो, इस के अलावा औरत के लिए उसका महरम ज़रूरी है। (फ़तहुल क़दीर) यह आयत हर उस इंसान के लिए है जो इस तरह की ताक़त रखे, उस के लिए हज फ़र्ज़ होने की दलील (तर्क) है। और हदीसों से इस मसले की वज़ाहत होती है कि ज़िन्दगी मे एक बार हज फ़र्ज़ है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1] हज की ताक़त होने के बाद भी हज न करना क़ुरआन ने इसे कुफ़्र से ताबीर किया है, जिस से हज के फ़र्ज़ होने को और भी ताक़त मिलती है, हदीसों में भी ऐसे इंसान को सख़्त तंबीह की गयी है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿103﴾

१०३. और अल्लाह (तआला) की रस्सी को सब मिलकर मज़बूती से थाम लो, और गुटबन्दी न करो,[1] और अल्लाह (तआला) की उस वक़्त की नेमत को याद करो जब तुम लोग आपस में एक-दूसरे के दुश्मन थे, उस ने तुम्हारे दिल में प्रेम डाल दिया और तुम उस की नेमत से भाई-भाई हो गये, और तुम आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे तो उस ने तुम्हें बचा लिया। अल्लाह (तआला) इसी तरह अपनी निशानियों को बयान करता है ताकि तुम हिदायत पा सको।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿104﴾

१०४. और तुम में से एक गिरोह ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाये और नेक कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और यही लोग सफल (कामयाब) होने वाले हैं।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿105﴾

१०५. और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अपने पास वाज़ेह दलील आ जाने के बावजूद भी फूट और भेद डाला, इन्हीं के लिए सख़्त अज़ाब है।

---

[1] ولا تفرقو (और गुटबन्दी न करो) के ज़रिये गुटों में बँटने से रोक लगा दी गयी है, इसका मतलब यह है कि उन दो नियमों से जिनका बयान हो चुका है मुँह फेर लेने की वजह से आपस में फूट पड़ सकती है और तुम अलग-अलग गुटों में बँट जाओगे, इसलिए गुटबन्दी का इतिहास देख लीजिए यही वजह वाज़ेह होकर सामने आयेंगी। क़ुरआन और हदीस को समझने और उसकी तफ़सीर में कुछ इख़्तिलाफ़, यह गुटबन्दी की वजह नहीं है, यह इख़्तिलाफ़ तो सहाबा और ताबईन के वक़्त में भी था, लेकिन मुसलमान गुटों में नहीं बँटे थे, क्योंकि आपसी इख़्तिलाफ़ के बाद भी सभी की इताअत का केन्द्र (मरकज़) और यक़ीन का बिन्दु एक ही था और वह है क़ुरआन और रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस, लेकिन जब शख़्सियत के नाम पर ख़्यालों का प्रदर्शन (इज़हार) होने लगा, तो इताअत और अक़ीदा के यह केन्द्र और बिन्दु बदल गये। अपने-अपने पेशवाओं और उन के क़ौल और ख़्यालात पहले मुक़ाम पर और अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के क़ौल और हुक्म दूसरे मुक़ाम पर कर दिये गये और यहीं से उम्मते मुसलिमा में गुटबन्दी शुरू हुई, जो रोज़ बरोज़ बढ़ती ही गयी और बहुत मज़बूत हो गयी।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿106﴾

१०६. जिस दिन कुछ मुँह सफ़ेद होंगे और कुछ काले,[1] काले मुँह वालों (से कहा जायेगा) कि तुम ने ईमान लाने के बाद कुफ़्र क्यों किया? अपने इंकार की सज़ा चखो।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿107﴾

१०७. और सफ़ेद मुँह वाले अल्लाह (तआला) की रहमत में होंगे और उस में हमेशा रहेंगे।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿108﴾

१०८. (हे नबी)! हम इन सच्ची आयतों की तिलावत आप पर कर रहे हैं और अल्लाह (तआला) का इरादा लोगों पर ज़ुल्म करने का नहीं है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿109﴾

१०९. और अल्लाह (तआला) के लिए है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह (तआला) की तरफ़ सभी कामों को लौटना है।

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿110﴾

११०. तुम सब से अच्छी उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी है कि तुम नेक कामों का हुक्म देते हो और बुरे कामों से रोकते हो, और अल्लाह (तआला) पर ईमान रखते हो। अगर अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिए बेहतर होता, उन में ईमानवाले भी हैं, लेकिन ज़्यादातर लोग फ़ासिक़ हैं।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿111﴾

१११. यह लोग तुम्हें सताने के सिवाय और ज़्यादा कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और अगर तुम से लड़ाई हो तो पीठ फेर लेंगे, फिर वे मदद नहीं दिये जायेंगे।

---

[1] हज़रत इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہما) ने इस से अहले सुन्नत वल जमाअत और अहले बिदअत मुराद लिया है। (इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर) इस से मालूम हुआ कि इस्लाम वही है जिस पर अहले सुन्नत वल जमाअत काम कर रहे हैं, और अहले बिदअत और मुख़ालिफ़ीन लोग इस्लाम के उस वरदान (नेमत) से महरूम हैं, जो नजात (मोक्ष) का सबब है।

The Ummah Technology Mission

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿112﴾

११२. यह हर जगह पर जलील हैं, यह और बात है कि अल्लाह (तआला) की या लोगों की पनाह में हों, यह अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार हो गये, और उन पर ग़रीबी थोप दी गयी। यह इसलिए कि यह लोग अल्लाह (तआला) की आयतों को नहीं मानते थे और बिला वजह नबियों को क़त्ल करते थे, यह बदला इनकी नाफ़रमानियों और हुदूद तोड़ने (सीमा लांघने) का है।

لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿113﴾

११३. यह सारे के सारे एक जैसे नहीं, बल्कि इन अहले किताब में एक गिरोह (सच्चाई पर) क़ायम भी है जो रात में अल्लाह की आयत पढ़ते और सज्दा करते हैं।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿114﴾

११४. यह अल्लाह और क़यामत (प्रलय) पर विश्वास (ईमान) रखते हैं, भलाईयों का आदेश करते और बुराईयों से रोकते हैं, और भलाई के कामों में जल्दी करते हैं, यह नेक लोगों में से हैं।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿115﴾

११५. और यह जो कुछ भी भलाई करें उसका अनादर (नाक़दरी) न किया जायेगा और अल्लाह (तआला) परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿116﴾

११६. बेशक काफ़िरों को उन के माल और उन की औलाद अल्लाह के यहां कुछ काम न आयेंगी, यह तो जहन्नमी (नरकीय) हैं जिस में वे हमेशा रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿117﴾

११७. वह जो भी इस दुनियावी ज़िंदगी में ख़र्च करते हैं उस हवा के समान है जिसमें पाला हो जो किसी ज़ालिम क़ौम के खेत को लग कर उसका नाश कर दे,[1] अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۭ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاۗءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ښ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُھُمْ اَكْبَرُ ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿118﴾

११८. ऐ ईमानवालो ! तुम अपना हार्दिक मित्र (जिगरी दोस्त) ईमानवालों के सिवाय किसी दूसरे को न बनाओ, (तुम नहीं देखते दूसरे लोग तो) तुम्हारी तबाही में कोई कसर उठा नही रखते, वह तो चाहते यह हैं कि तुम दुख में पड़ो, उनकी दुश्मनी तो ख़ुद उनके मुंह से भी वाज़ेह हो चुकी है और वह जो उन के सीनों में छिपा है वह बहुत ज़्यादा है, हम ने तुम्हारे लिए आयतों को बयान कर दिया तुम अक़्लमंद हो (तो फ़िक्र करो)

هٰٓاَنْتُمْ اُولَاۗءِ تُحِبُّوْنَھُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّھٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ښ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿119﴾

११९. हां, तुम तो उन से मुहब्बत करते हो और वह तुम से मुहब्बत नही करते, तुम पूरी किताब को मानते हो और (वह नहीं मानते फिर मुहब्बत कैसी?) यह तुम्हारे सामने तो अपने ईमान को क़ुबूल करते हैं, लेकिन अकेले में ग़ुस्से में ऊंगलियां चबाते हैं ।[2] कह दो अपने ग़ुस्से में ही मर जाओगे, अल्लाह तआला सीनों की छुपी बातों को अच्छी तरह जानता है ।

---

[1] क़यामत के दिन काफ़िरों के माल काम आयेंगे न औलाद, यहां तक कि भलाई के कामों में ख़र्च किया हुआ माल भी बेकार हो जायेगा, और उनका मुवाज़ना उस पाले की जैसी है जो हरी-भरी खेती को जलाकर बर्बाद कर देता है, ज़ालिम इन खेतियों को देखकर ख़ुश हो रहे होते हैं और फ़ायेदा की उम्मीद करते हैं कि अचानक उनकी उम्मीदें मिट्टी में मिल जाती हैं । इस से मालूम हुआ कि जब तक ईमान नही होगा तब तक भलाई में माल ख़र्च करने वालों की दुनिया में चाहे जितनी मशहूर क्यों न हो, आख़िरत में उन्हें उसका बदला कुछ न मिलेगा, वहां तो उन के लिए रोज़ाना जहन्नम में रहने का अज़ाब ही है ।

[2] عَضَّ يَعَضُّ का मतलब दांत से काटने के हैं, यह उनके ग़ुस्से की ज़्यादती व तेज़ी का बयान है, जैसाकि अगली आयत وَإِن تَمْسَسْكُمْ में भी उनकी इसी हालत को वाज़ेह किया जा रहा है ।

The Ummah Technology Mission

إِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا ۗ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿120﴾

१२०. तुम्हें अगर भलाई मिले तो उन्हें बुरा लगता है, (हाँ), अगर बुराई पहुँचे तो खुश होते हैं, अगर तुम सब्र करो और परहेजगारी करो तो उनकी चाल तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचायेगी। अल्लाह (तआला) ने उन के अमलों को घेर रखा है।

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿121﴾

१२१. (ऐ नबी! उस वक़्त को भी याद करो) जब सुबह ही सुबह आप अपने घर से निकल कर मुसलमानों को मैदाने जंग में लड़ाई के मोर्चे पर ठीक तरह से[1] बिठा रहे थे, और अल्लाह तआला सुनने जानने वाला है।

إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿122﴾

१२२. जब तुम्हारे दो गिरोह ने हिम्मत खो दिया,[2] उनका वली अल्लाह है,[3] और उसी अल्लाह पर मुसलमानों को भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿123﴾

१२३. और अल्लाह ने बद्र की जंग में तुम्हारी उस वक़्त मदद की जबकि तुम गिरी हुई हालत में थे,[4] इसलिए अल्लाह से डरो ताकि शुक्रगुज़ार बनो।

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ﴿124﴾

१२४. जब आप मुसलमानों को तसल्ली दे रहे थे, क्या तुम्हें यह काफ़ी नहीं होगा कि अल्लाह तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे।

---

[1] ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के नज़दीक यह ओहद के जंग की घटना (वाक़ेआ) है, जो शव्वाल (रमज़ान के बाद का महीना जिसे ईद का महीना भी कहते हैं लेकिन वास्तविक (हक़ीक़ी) अरबी नाम यह है) ३ हिजरी में हुई।

[2] यह औस और खज़रज के दो क़बीले (बनू हारिसा और बनू सलमा) थे।

[3] इस से मालूम हुआ के अल्लाह ने उन की मदद की और उन की कमज़ोरी को दूर करके उन को हिम्मत दिया।

[4] तादाद और सामान की कमी के आधार पर, क्योंकि बद्र की जंग में मुसलमानों की तादाद ३१३ थी और वह भी बिना सामान के, सिर्फ़ दो घोड़े और सत्तर ऊँट थे, बाक़ी सभी पैदल थे। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿125﴾

१२५. क्यों नहीं? अगर तुम सब्र और परहेज़गारी करो और यह लोग इसी दम तुम्हारे पास आ जायें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद पाँच हज़ार फ़रिश्तों से करेगा जो निशानदार होंगे।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿126﴾

१२६. और हम ने इसे तुम्हारे लिये सिर्फ़ ख़ुशख़बरी और तुम्हारे दिलों के इत्मिनान के लिए बनाया, वर्ना मदद तो ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से ही होती है।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَاۗىِٕبِيْنَ ﴿127﴾

१२७. (इस अल्लाह की मदद का मक़सद यह था कि अल्लाह) काफ़िरों के एक गिरोह को काट दे या ज़लील कर दे और वह नाकाम होकर लौटें।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿128﴾

१२८. (हे पैग़म्बर) आप के वश में कुछ नहीं[1] अल्लाह (तआला) चाहे तो उनकी तौबा क़बूल कर ले या अज़ाब दे, क्योंकि वे ज़ालिम हैं।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿129﴾

१२९. आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है, वह जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे अज़ाब दे और अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

---

[1] यानी उन काफ़िरों को हिदायत देना या उनके बारे में किसी तरह का फ़ैसला करना अल्लाह के वश में है, हदीस में आता है कि ओहद की जंग में नबी ﷺ के दाँत भी शहीद हुए और चेहरा भी ज़ख़्मी हुआ तो आप ने कहा कि, "वह क़ौम किस तरह कामयाब होगी जिस ने अपने नबी को घायल कर दिया।" यानी आप ने उनकी हिदायत से नाउम्मीदी ज़ाहिर की, इस पर यह आयत उतरी। इस तरह कुछ कथनों में आता है कि आप ﷺ ने कुछ काफ़िरों के लिए क़ुनूते नाज़िला: का एहतेमाम किया, जिस में उन के लिये बद्दुआ दिया, जिस पर यह आयत अल्लाह तआला ने उतारी, इसलिए आप ने बद्दुआ बन्द कर दिया। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

इस आयत से उन लोगों को नसीहत लेनी चाहिए जो नबी ﷺ को मुख़्तार कुल मानते हैं कि उन को इतना भी हक़ नहीं था कि किसी को सच्ची राह पर लगा दें, अगरचे कि आप मार्ग (हिदायत) की तरफ़ बुलाने के लिये भेजे गये थे।

The Ummah Technology Mission

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۠ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿130﴾

१३०. ऐ ईमानवालो! दुगुना तिगुना कर व्याज न खाओ,[1] और अल्लाह (तआला) से डरो ताकि तुम्हें कामयाबी मिले।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿131﴾

१३१. और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿132﴾

१३२. और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्मों की पैरवी करो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाये।

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿133﴾

१३३. और अपने रब की माफ़ी की तरफ़ और उस जन्नत की ओर दौड़ो[2] जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है, जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गयी है।

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿134﴾

१३४. जो लोग आसानी में और तकलीफ़ में (भी अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं, ग़ुस्से को पी जाते हैं, और लोगों को माफ़ करने वाले हैं।[3] अल्लाह उन परहेज़गारों को दोस्त रखता है।

---

[1] चूंकि ओहद की जंग में नाकामी रसूल अल्लाह ﷺ के हुक्म पर अमल न करने और दुनियावी दौलत से लालच की वजह से हुई थी, इसलिए अब दुनिया के लालच की सब से ज़्यादा ख़तरनाक और स्थाई (मुस्तक़िल) रूप ब्याज से मना किया जा रहा है और हुक्म को बजा लाने पर ज़ोर दिया जा रहा है, और बढ़ा-चढ़ा कर ब्याज न खाओ का यह कभी भी मतलब नहीं है कि अगर आम ब्याज है तो जायेज़ है, बल्कि ब्याज थोड़ा हो ज़्यादा, अकेला हो या मिला हुआ सभी नाजायेज़ है जैसा कि पहले गुज़र चुका है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अल्लाह से डरो और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है, जिस से यह तंबीह भी है कि अगर ब्याज लेने से न रुके तो यह अमल तुम्हें कुफ़्र तक पहुंचा सकता है, क्योंकि ऐसा करना अल्लाह और उस के रसूल से जंग का एलान है।

[2] धन-दौलत और दुनिया के पीछे लगकर आख़िरत (परलोक) बर्बाद करने के बजाय अल्लाह और रसूल के हुक्मों की पैरवी करो और अल्लाह की माफ़ी और उसकी जन्नत की राह अपनाओ जो फ़रमाँबर्दारों के लिए बनायी गयी है, इसलिए आगे फ़रमाबर्दारों की कुछ फ़ज़ीलतें बतायी गयी हैं।

[3] यानी जब उन्हें ग़ुस्सा आता है तो उसे पी जाते हैं, यानी ग़ुस्से मे काम नहीं करते और उन्हें माफ़ कर देते हैं जो उन के साथ बुराई करते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۫ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿135﴾

१३५. जब उन से कोई बुरा काम हो जाये या कोई गुनाह कर बैठें, तो जल्दी ही अल्लाह की याद और अपने गुनाहों के लिए तौबा करते हैं,[1] और हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) के सिवाय गुनाहों को कौन माफ़ कर सकता है, और वे जानते हुये अपने किये पर इसरार नहीं करते।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿136﴾

१३६. उन्हीं का बदला उन के पालनहार की ओर से माफ़ी और बाग़ है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं जिस में वह हमेशा रहेंगे और सदाचारियों (नेक काम करने वालों) का यह कितना अच्छा अज्र है।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿137﴾

१३७. तुम से पहले से नियम चला आ रहा है, तुम धरती में यात्रा (सफ़र) करो तथा देखो कि जो अल्लाह की आयतों को नहीं माने उनका अन्त (अंजाम) कैसा हुआ।

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿138﴾

१३८. यह लोगों के लिये एक बयान और परहेज़गारों के लिये हिदायत और नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿139﴾

१३९. तुम हिम्मत न खोओ, न फ़िक्र करो, अगर तुम ईमानदार हो तो तुम्हीं विजयी होगे।

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿140﴾

१४०. (इस जंग में) अगर तुम ज़ख़्मी हुये हो तो वह भी (बद्र की जंग में) इसी तरह ज़ख़्मी हुये हैं और इन दिनों को हम लोगों के बीच अदलते-बदलते रहते हैं,[2] ताकि अल्लाह ईमान वालों को (अलग करके) देख ले, और तुम में से

---

[1] यानी उन के इंसान होने की वजह से जब उन से कोई गुनाह या ग़लती हो जाती है, तो फ़ौरन तौबा करने लगते हैं।

[2] एक और तरह से मुसलमानों को तसल्ली दी जा रही है कि अगर ओहद में तुम्हारे कुछ लोग घायल हुये हैं तो क्या हुआ? तुम्हारे मुख़ालिफ़ भी तो बद्र की जंग में और ओहद के शुरू में इसी तरह घायल हो चुके हैं और यह अल्लाह की रीति है कि वह जीत हार के दिनों को बदलता रहता है, कभी जीतने वाले को हरा कर कभी हारने वाले को जिता कर देता है।

The Ummah Technology Mission

कुछ को शहीद बना दे, और अल्लाह ज़ालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿141﴾

१४१. और ताकि अल्लाह मोमिनों को अलग कर ले और काफ़िरों का सत्यानाश कर दे।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿142﴾

१४२. क्या तुम ने सोचा है कि जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल हो जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने यह नहीं देखा है कि कौन तुम में जिहाद (धर्मयुद्ध) करते हैं और कौन सब्र करते हैं।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿143﴾

१४३. और तुम इस से पहले मौत की तमन्ना करते थे अब तो तुम ने उसे आंखों से देख लिया।

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿144﴾

१४४. और मुहम्मद तो सिर्फ़ एक रसूल हैं।[1] इस से पहले बहुत से रसूल गुज़रे हैं तो अगर वह मर जायें या मार दिये जायें तो क्या तुम (इस्लाम) से एड़ियों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ी के बल फिर जाये वह अल्लाह को कोई नुक़सान (हानि नहीं पहुंचा सकेगा, और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को जल्द बदला देगा।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿145﴾

१४५. और बिना अल्लाह तआला के हुक्म के कोई जीव नहीं मर सकता, मुक़र्ररा वक़्त लिखा हुआ है, दुनिया से मुहब्बत करने वालों को हम कुछ दुनिया अता कर देते हैं और आख़िरत का सवाब चाहने वालों को हम वह भी अता करेंगे और शुक्रिया अदा करने वालों को हम जल्द ही अच्छा बदला देंगे।

---

[1] मुहम्मद ﷺ सिर्फ़ रसूल (ईशदूत) ही हैं, यानी उनकी विशेषता (ख़ुसूसियत) भी रिसालत है यह नहीं कि वह इंसानी ख़ुसूसियत से ऊपर और ख़ुदाई सिफ़ात से युक्त (मुत्तसिफ़) हैं कि उन्हें मौत से पाला न पड़े।

The Ummah Technology Mission

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ (146)

१४६. और बहुत से नवियों के साथ बहुत से अल्लाह वाले जिहाद (धर्मयुद्ध) कर चुके हैं, उन्हें भी अल्लाह की राह में दुख पहुंचे, लेकिन न तो उन्होंने हिम्मत खोई न कमज़ोर रहे और न दबे और अल्लाह सब्र करने वालों को ही चाहता है।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (147)

१४७. और वह यही कहते रहे कि हे हमारे रब हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे और हम से हमारे कामों में अकारण ज़्यादती हुई हो, उसे माफ़ कर और हमें मज़बूती अता कर और हमें काफ़िरों की क़ौम पर मदद अता कर।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (148)

१४८. और अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया का सवाब दिया और आख़िरत के पुण्य (सवाब) की विशेषता (फ़ज़ीलत) भी प्रदान (अता) की और अल्लाह तआला नेकी करने वालों को दोस्त रखता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓي اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ (149)

१४९. हे ईमानवालो! अगर तुम काफ़िरों की बातें मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ी के बल पलटा देंगे (यानी तुम्हें मुर्तद बना देंगे) फिर तुम घाटे में हो जाओगे।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ (150)

१५०. बल्कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मालिक है और वही सब से अच्छा मददगार है।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ (151)

१५१. हम जल्द ही काफ़िरों के दिलों में डर डाल देंगे, इस वजह से कि वे अल्लाह के साथ उन चीज़ों को साझी करते हैं, जिस की कोई दलील अल्लाह ने नहीं उतारी,[1] उनका ठिकाना

[1] मुसलमानों की हार देखते हुए कुछ काफ़िरों के दिलों में यह ख़्याल आया कि यह मुसलमानों को ख़त्म करने का अच्छा मौक़ा है, इस मौक़ा पर अल्लाह तआला ने उन के दिलों में मुसलमानों का डर डाल दिया, फिर उन्हें अपने इस ख़्याल को पूरा करने की हिम्मत न रही। (फ़तहुल क़दीर) सहीहैन की हदीस में है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मुझे पाँच चीज़ें ऐसी अता

The Ummah Technology Mission

जहन्नम (नरक) है और उन ज़ालिमों की बुरी जगह है।

१५२. और अल्लाह (तआला) ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उस के हुक्म से उन्हें काट रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम अपना हौसला खो रहे थे और काम में झगड़ने लगे, और नाफ़रमानी की उस के बाद कि उस ने तुम्हारी मनपसंद चीज़ें तुम्हें दिखा दीं, तुम में से कुछ दुनिया चाहते थे और कुछ का आख़िरत का विचार (ख़्याल) था तो फिर उस ने तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हारा इम्तेहान ले और बेशक उस ने तुम्हारी ग़ल्ती को माफ़ कर दिया और ईमानवालों पर अल्लाह (तआला) बहुत फ़ज़्ल वाला है।[1]

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْھُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿152﴾

(प्रदान) की गयी हैं, जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं अता की गयी उन में एक यह है कि (نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيرَةَ شَهْرٍ) "दुश्मन के दिल में एक माह की दूरी तक मेरा डर डालकर, मेरी मदद की गयी है।"

इस हदीस से मालूम हुआ कि आप ﷺ का डर स्थाई (मुस्तक़िल) रूप से दुश्मनों के दिलों में डाल दिया गया, इस आयत से मालूम होता है कि आप ﷺ के साथ आप की उम्मत यानी मुसलमानों का भी डर मूर्तिपूजकों के दिलों में डाल दिया गया है, इसकी वजह उन का शिर्क है, यानी मूर्तिपूजकों का दिल दूसरों के डर से काँपता रहता है, शायद यही वजह है कि मुसलमानों की एक बड़ी तादाद मूर्तिपूजकों की तरह यक़ीन और अमल की वजह से ही दुश्मन उन से डरने के बजाय वह दुश्मनों से डरते हैं।

[1] इस में सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की उस ख़ुसूसियत का बयान है जो उनकी कमियों के बाद भी अल्लाह ने उन पर फ़रमाया, यानी उनकी ग़लतियों का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) करके कि भविष्य (मुस्तक़बिल) में ऐसा न करें, अल्लाह ने उन के लिए माफ़ी का एलान कर दिया ताकि कोई हासिद उन पर इल्ज़ाम न लगा सके, जब अल्लाह तआला ने ही क़ुरआन करीम में उन के लिए सामान्य (आम) माफ़ी का एलान कर दिया, तो अब किसी को ताना या इल्ज़ाम लगाने का कोई मौक़ा कहाँ रह गया ?

The Ummah Technology Mission

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُۥنَ عَلَىٰٓ أَحَدٍ وَٱلرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِىٓ أُخْرَىٰكُمْ فَأَثَٰبَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا۟ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ أَصَابَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾

१५३. जबकि तुम चढ़े चले जा रहे थे, किसी की ओर ध्यान तक नही करते थे और अल्लाह के रसूल तुम को पीछे से पुकार रहे थे, बस तुम्हें दुख पर दुख पहुँचा ताकि तुम अपनी खोयी (विजय) पर ग़म न करो और न उस (सदमा) पर जो तुम्हें पहुँचा[1] और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सारे कर्मो (आमाल) को जानता है।

ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنۢ بَعْدِ ٱلْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَآئِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِٱللَّهِ غَيْرَ ٱلْحَقِّ ظَنَّ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ ٱلْأَمْرِ مِن شَىْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ ٱلْأَمْرَ كُلَّهُۥ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِىٓ أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ ٱلْأَمْرِ شَىْءٌ مَّا قُتِلْنَا هَٰهُنَا ۗ قُل لَّوْ كُنتُمْ فِى بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ ٱلَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ ٱلْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِىَ ٱللَّهُ مَا فِى صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِى قُلُوبِكُمْ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾

१५४. फिर उस दुख के बाद तुम पर शान्ति उतारी और तुम में से एक गिरोह को शान्ति की नींद आने लगी, और हाँ, कुछ वह लोग भी थे जिन्हें अपनी जानों की पड़ी थी।[2] वह अल्लाह तआला के लिए नाहक़ मूर्खता जैसा ग़लत ख़्याल करने लगे और कहते थे कि हमें भी कुछ हक़ है, आप कह दीजिए काम तो कुल का कुल अल्लाह के वश में है, यह लोग अपने दिलों के भेद आप को नहीं बताते, कहते है कि अगर हमें कुछ भी अधिकार (हक़) होता तो यहाँ क़त्ल न किये जाते। आप कह दीजिए कि अगर तुम अपने घरों में होते तो भी जिन के नसीब में क़त्ल होना था वह क़त्ल के मुक़ाम की तरफ़ चल खड़े होते। अल्लाह (तआला) को तुम्हारे सीनों के अन्दर का इम्तेहान लेना था और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उस से पाक करना था, और अल्लाह (तआला) ग़ैब का जानने वाला है (दिलों के भेद अच्छी तरह जानता है)।

---

[1] यानी यह दुख पर दुख इसलिए दिया ताकि तुम्हारे अन्दर दु:ख सहन करने की ताक़त और मज़बूत इरादा और हिम्मत पैदा हो, जब यह ताक़त और हिम्मत पैदा हो जाती है तो फिर इंसान को खोई चीज़ पर दुख नहीं होता, तक़लीफ़ पर किसी तरह की आधीरता (मलाल) नहीं होती है।

[2] इस से मुराद मुनाफ़िक़ हैं, वाज़ेह (स्पष्ट) है कि ऐसी हालत में उन को तो अपनी जानों की ही पड़ी थी।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۙ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿155﴾

१५५. तुम में से जिन लोगों ने उस दिन पीठ दिखाई जिस दिन दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई थी, यह लोग अपने कुछ कर्मों (आमाल) की वजह से शैतान के वहकावे में आ गये, लेकिन यक़ीन करो कि अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, अल्लाह तआला माफ़ करने वाला धैर्य (हिल्म) वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَّوْ كَانُوا عِندَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا ۖ لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿156﴾

१५६. हे मुसलमानों! तुम उनकी तरह न बनो जो नाशुक्रे हो गये और उन के भाईयों ने जब ज़मीन में सफ़र किया या जिहाद के लिये निकले तो कहा कि अगर वह हमारे पास रहते तो उन्हें मौत न आती न उनका क़त्ल होता,[1] (उन के इस ख़्याल की वजह यह है कि) अल्लाह इसे उन के दिलों के हसरत की वजह बना दे, ज़िन्दगी और मौत अल्लाह ही देता है और अल्लाह तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿157﴾

१५७. अगर तुम अल्लाह की राह में शहीद हो जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की माफ़ी और रहमत उस (माल) से अच्छी है जो वे जमा कर रहे हैं।[2]

وَلَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿158﴾

१५८. और तुम मरो या मारे जाओ तुम्हें अल्लाह के पास ही जमा होना है।

---

[1] ईमानवालों को काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के जैसे ईमान से रोका जा रहा है, क्योंकि यह ईमान बुज़दिली का आधार है। इस के ख़िलाफ़ जब यक़ीन हो कि मौत व हयात अल्लाह तआला के हाथ में है, फिर यह कि मौत का वक़्त मुक़र्रर है तो इस से इंसान के अन्दर इरादा, हिम्मत और अल्लाह की राह में लड़ने की भावना (ख़्वाहिश) पैदा होती है।

[2] मौत तो यक़ीनी आनी है, लेकिन अगर मौत ऐसी आये जिस के बाद इंसान अल्लाह की माफ़ी और कृपा का पात्र (मुस्तहिक़) हो जाये, तो यह दुनिया की धन-दौलत से बेहतर है, जिस को जमा करने में इंसान ज़िन्दगी खपा देता है, इसलिए अल्लाह की राह में जिहाद करने से पीछे नहीं हटना चाहिए इससे लगाव और मुहब्बत होनी चाहिए क्योंकि इस से अल्लाह की माफ़ी और रहमत हासिल हो जाती है, लेकिन इस के साथ शर्त है कि मन की पाकीज़गी के साथ हो।

The Ummah Technology Mission

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿159﴾

१५९. अल्लाह की रहमत की वजह से आप उन के लिये कोमल बन गये हैं और अगर आप बदज़ुबान और सख़्त दिल होते तो यह सब आप के पास से भाग खड़े होते, इसलिए आप उन्हें माफ़ करें,[1] और उन के लिए क्षमा-याचना करें और काम का मश्वरा उन से किया करें,[2] फिर जब आप का पुख़्ता इरादा हो जाये तो अल्लाह (तआला) पर भरोसा करें[3] और अल्लाह (तआला) भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है।

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿160﴾

१६०. अगर अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं हो सकता, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे? और ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۗ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿161﴾

१६१. और यह नामुमकिन है कि नबी के ज़रिये ख़्यानत हो जाये, हर ख़्यानत करने वाला क़यामत के दिन ख़्यानत को लेकर हाज़िर होगा, फिर हर इंसान को अपने अमल का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर ज़ुल्म न किया जायेगा।

---

[1] नबी ﷺ जो ऊँचे अख़लाक़ वाले थे, अल्लाह तआला अपने इस पैग़म्बर पर एक परोपकार (एहसान) का बयान कर रहा है कि आप ﷺ के अन्दर जो नर्मी है यह अल्लाह तआला की ख़ास रहमत का नतीजा है, अगर आप ﷺ के अन्दर यह न होती इसके विपरीत आप ﷺ दुर्व्यवहारी (बदअख़लाक़) और सख़्त दिल के होते तो लोग आप ﷺ से क़रीब होने के बजाय दूर भागते, इसलिए आप ﷺ माफ़ी से ही काम लें।

[2] यानी मुसलमानों की तसल्ली के लिए मश्विरा कर लिया करें, इस आयत से मश्विरा की अहमियत, फ़ज़ीलत, फ़ायेदा, उसकी ज़रूरत और अच्छा होना साबित होता है। मश्विरा लेने का यह हुक्म कुछ आलिमों के नज़दीक ज़रूरी है और कुछ के विचार में समुचित (मुस्तहब)।

[3] यानी मश्विरा के बाद जिस पर आप का इरादा पक्का हो जाये, फिर अल्लाह पर भरोसा करके कर डालें, इस से तो एक बात यह मालूम हुई कि मश्विरा के बाद आख़िरी फ़ैसला हाकिम ही का होगा न कि परामर्शदाता (मश्वरा देने वाला) या उन के बहुमत (अकसरियत) का जैसाकि लोकतन्त्र में है। दूसरी यह कि सारा भरोसा अल्लाह पर ही होगा न कि मश्विरा देने वालों की अक़्ल या समझ पर। अगली आयत में भी अल्लाह पर भरोसा करने पर और ज़ोर दिया जा रहा है।

The Ummah Technology Mission

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿162﴾

१६२. क्या वह इंसान जिस ने अल्लाह की खुशी का अनुसरण (इत्तेबा) किया उस के समान है जो अल्लाह के ग़ुस्से के साथ लौटा? और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है।

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿163﴾

१६३. अल्लाह तआला के पास उन के अलग-अलग दर्जे हैं और उन के सभी अमलों को अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿164﴾

१६४. बेशक मुसलमानों पर अल्लाह का उपकार (एहसान) है कि उस ने उन्हीं में से एक रसूल उन में भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और सूझ-बूझ सिखाता है,[1] और बेशक यह सब उस से पहले वाज़ेह तौर से भटके हुए थे।

اَوَ لَمَّاۤ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿165﴾

१६५. (क्या बात है) कि जब तुम पर एक मुसीबत आई जिस के दुगना तुम ने उन्हें पहुँचाई है तो तुम ने कहा कि यह कहाँ से आयी। (हे रसूल) आप कह दें कि यह तुम ने ख़ुद अपने ऊपर डाली है, बेशक हर चीज़ पर अल्लाह कुदरत

---

[1] इस आयत में रिसालत के तीन ख़ास मक़सद का बयान है। (१) आयतों की तिलावत (२) पाक करना (३) किताब और सूझ-बूझ की नसीहत। किताब की शिक्षा (इल्म) में तिलावत ख़ुद आ जाती है, तिलावत के साथ ही शिक्षा मुमकिन है, तिलावत के बिना शिक्षा का अस्तित्व (वजूद) नहीं, इस के सिवाय तिलावत को एक मक़सद के तौर पर बयान किया गया है, इससे इस बिन्दु का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) होता है कि तिलावत ख़ुद भी पाकी और सवाब का काम है, चाहे पढ़ने वाला उसका मतलब समझे या न समझे। क़ुरआन का मतलब और मक़सद समझने की कोशिश करना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है, लेकिन जब तक यह मक़सद हासिल न हो या इतनी समझ व क़ाबलियत न हो, क़ुरआन की तिलावत में सुस्ती या रूके रहना ठीक नहीं, पाकी का मतलब है ईमान, अमल और अख़लाक़ का सुधार। जिस तरह आप ﷺ ने उन्हें मूर्तिपूजा से हटाकर तौहीद की तरफ़ लगाया, इसी तरह बहुत असभ्य (ग़ैर मुहज़्ज़ब) और ग़लत समाज को सभ्य (तहज़ीब) और चरित्र (अख़लाक़) के रास्ते पर चलाया, हिक्मत (समझ-बूझ) व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के क़रीब हदीस है।

The Ummah Technology Mission

रखता है।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿166﴾

१६६. और दोनों गिरोहों की मुठभेंड़ के दिन तुम्हें जो कुछ पहुंचा तो यह अल्लाह के हुक्म से पहुंचा और ताकि अल्लाह मुसलमानों को ज़ाहिरी तौर से जान ले।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿167﴾

१६७. और मुनाफ़िकों को जान ले जिन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या हमले से बचाव करो तो उन्होंने कहा कि अगर हम जानते कि लड़ाई होगी तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन ईमान की निसबत कुफ़्र से क़रीब थे, अपने मुख से वह बात कर रहे थे जो उन के दिलों में न थी, और अल्लाह उसे जानता है जिसे वे छुपाते हैं।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿168﴾

१६८. जिन्होंने अपने भाईयों के लिये कहा और ख़ुद भी बैठे रहे कि अगर वह हमारी बात मानते तो क़त्ल न किये जाते, कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी मौत को टाल दो।[1]

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿169﴾

१६९. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मुर्दा न समझो बल्कि वे ज़िन्दा हैं, अपने रब के पास रोज़ी दिये जा रहे हैं।[2]

---

[1] यह मुनाफ़िकों के उस क़ौल का खण्डन (तरदीद) है कि "अगर वह हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया अगर तुम सच्चे हो तो तुम अपने ऊपर से मौत को टाल दो, मुराद यह है कि नसीब से किसी को अलग नही किया गया, मौत भी जहां और जिस तरह नसीब में है, उसी जगह पर और उसी तरह आकर रहेगी, इसलिए जिहाद और अल्लाह की राह में लड़ने से रुकने या भागने से कोई मौत के पंजे से नहीं बच सकता।

[2] शहीदों की यह ज़िन्दगी वास्तविक (हक़ीक़ी) है या काल्पनिक (ख़्याली)? बेशक वास्तविक है, लेकिन इसका इल्म दुनिया वालों को नहीं है, जैसाकि क़ुरआन ने वाज़ेह कर दिया है। देखिए सूरः अल-बक़रः-१५४। फिर इस ज़िन्दगी का मतलब क्या है? कुछ कहते हैं कि क़ब्रों में उनकी रूहें लौटा दी जाती हैं और वह अल्लाह की अता की गयी नेमतों को हासिल करके ख़ुश होते हैं, कुछ कहते हैं कि जन्नत के फलों की ख़ुशबू उन्हें आती रहती है, जिस से उनकी पाक रूहें मगन रहती है, लेकिन हदीस से एक तीसरी हालत सामने आती है, इसलिए वही सही है वह यह कि उनकी रूहें हरे पंक्षियों के जिस्म में या सीने में दाख़िल कर दी जाती हैं और वह जन्नत

The Ummah Technology Mission

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿170﴾

१७०. अल्लाह तआला ने अपनी कृपा (फ़ज़्ल) जो उन को दे रखी है, उस से वह बहुत खुश हैं और खुशियाँ मना रहे हैं उन लोगों के बारे में जो अब तक उन से नहीं मिले उन के पीछे हैं, इस बात पर कि उन को न कोई डर है और न कोई ग़म।

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿171﴾

१७१. वह अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल से खुश होते हैं और उस से भी कि अल्लाह तआला ईमानवालों के अज्र को बर्बाद नहीं करता।

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿172﴾

१७२. जिन लोगों ने घायल होने के बाद (भी) अल्लाह और रसूल का हुक्म मान लिया उन में से जो नेक काम किये और परहेज़गार रहे उन के लिए बड़ा अज्र है।

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿173﴾

१७३. जिनसे लोगों ने कहा कि लोग तुम्हारे लिये जमा हो चुके हैं इसलिए उन से डरो, तो उनका ईमान बढ़ गया और कहा कि अल्लाह हमारे लिये बस है और वह सब से अच्छा संरक्षक (वली) है।[1]

में खाती पीती फिरती हैं और वहाँ की नेमतों से फ़ायदेमंद होती रहती हैं। (फ़तहुल क़दीर, निर्देशित सहीह मुस्लिम किताबुल ईमार:)

[1] "हमराउल असद" और कहा जाता है कि छोटे बद्र के मुक़ाम पर अबू सुफ़ियान ने कुछ लोगों की ख़िदमत पैसा देकर हासिल की और उन के ज़रिये मुसलमानों में यह अफ़वाह फैला दी कि मक्का के मूर्तिपूजक जंग के लिए भरपूर तैयारी कर रह हैं, ताकि यह सुन कर मुसलमानों की हिम्मत टूट जाये। कुछ कथनों (रिवायतों) में यह है कि यह काम शैतान ने अपने चेलों से लिया, लेकिन मुसलमान यह अफ़वाह सुन कर और भी मज़बूत इरादे और हिम्मत से तैयार हो गये, जिसको यहाँ ईमान की अधिकता से तुलना (तावीर) की गयी है क्योंकि ईमान जितना मज़बूत होगा जिहाद की हिम्मत और इरादा भी उतना ही ज़्यादा होगा। यह आयत इस बात की गवाह है कि ईमान कोई ठोस चीज़ नहीं है, बल्कि इस में कमी और ज़्यादती होती रहती है जैसाकि मोहद्दिसीन का ख़्याल है, यह भी मालूम हुआ कि दुख में ईमान वाले अल्लाह पर यक़ीन और भरोसा करते हैं इसीलिए हदीस में (حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ) पढ़ने पर बल दिया गया है, इसी तरह सहीह बुख़ारी में है हज़रत इब्राहीम ﷺ को जब आग में डाला गया तो आप की ज़बान पर यही लफ़्ज़ थे। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ
لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ
وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿174﴾

१७४. (साबित यह हुआ कि) वह अल्लाह की नेमत के साथ वापस हुए उन्हें कोई दुख नहीं पहुंचा, उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी का रास्ता अपनाया और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا
تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿175﴾

१७५. यह शैतान ही है जो अपने दोस्तों से डराता है, इसलिए उन से न डरो मुझ से ही डरो अगर तुम ईमान वाले हो।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ
لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ
لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿176﴾

१७६. जो तेज़ी से कुफ़्र में जा रहे हैं, उन से आप ग़मगीन न हों, वह अल्लाह तआला का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अल्लाह आख़िरत में उन्हें कोई हिस्सा नहीं देना चाहता[1] और उन के लिए बड़ा अज़ाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا
اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿177﴾

१७७. कुफ़्र को ईमान के बदले ख़रीदने वाले लोग कदापि-कदापि अल्लाह (तआला) को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और उन्हीं के लिए सख़्त अज़ाब है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ
لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿178﴾

१७८. काफ़िर लोग यह न सोचें कि हमारा उन्हें मुहलत देना उन के लिये अच्छा है, हम यह मुहलत इसलिये दे रहे हैं कि वह और ज़्यादा गुनाह कर लें, और उन्हीं के लिये अपमानित (रुस्वा करने वाला) यातना (अज़ाब) है।[2]

---

[1] नबी ﷺ की दिली तमन्ना थी कि सभी लोग मुसलमान हो जायें, इसी वजह से उन के इंकार और झुठलाने से आप को दुख होता था, अल्लाह तआला ने इस आयत में आप ﷺ को तसल्ली दी है कि आप दुखी न हों यह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अपनी ही आख़िरत ख़राब कर रहे हैं।

[2] इस आयत में अल्लाह तआला के वक़्त देने के क़ानून का बयान है, यानी अल्लाह तआला अपने क़ानून और मर्ज़ी से काफ़िरों को वक़्त अता करता है, वक़्ती तौर से उन्हें सांसारिक ख़ुशहाली और माल व औलाद अता (प्रदान) करता है, लोग समझते हैं कि उन पर अल्लाह की रहमत हो रही है, लेकिन अगर अल्लाह की अता की हुई सुख-समृद्धि (ऐशो-आराम) से लाभान्वित होने वाले सवाब और अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) करने का मार्ग (रास्ता) नहीं अपनाते तो

The Ummah Technology Mission

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿179﴾

१७९. जिस हाल पर तुम हो उसी पर अल्लाह ईमानवालों को छोड़ नहीं देगा, जब तक कि पाक और नापाक को अलग-अलग न कर दे, और न अल्लाह ऐसा है कि तुम्हें ग़ैब से बाख़बर कर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिसको चाहे चुन लेता है, इसलिए तुम अल्लाह (तआला) पर और उसके रसूलों पर ईमान रखो, अगर तुम ईमान लाओ और अल्लाह से परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा बदला है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿180﴾

१८०. और जिन को अल्लाह ने अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से (धन) दिया है और वह उस में कंजूसी करते हैं तो इसे अच्छा न समझें बल्कि वह उन के लिए बहुत बुरा है, उन्होंने जिस (धन) में कंजूसी की है क़यामत के दिन उन के (गले का) तौक़ होगा[1] और आसमानों व ज़मीन का हक़ (मीरास) सिर्फ़ अल्लाह के लिये है, और वह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿181﴾

१८१. बेशक अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह ग़रीब है और हम ग़नी हैं, हम उनकी यह बात लिख लेंगे और इन के ज़रिये रसूलों का नाहक़ क़त्ल को भी और हम कहेंगे कि जलने का अज़ाब चखो।

यह दुनियावी सुख अल्लाह तआला की नेमत नहीं, अल्लाह कि तरफ़ से वक़्त अता करना है, जिस से उन के कुफ़्र और नाफ़रमानी में बढ़ोत्तरी ही होती है, आख़िर वह नरक की स्थाई (दायमी) यातना के हक़दार हो जाते हैं।

[1] इस में उस कंजूस का बयान किया गया है, जो अल्लाह के दिये हुए माल को अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करता, यहाँ तक कि उन में से फ़र्ज़ ज़कात भी नहीं निकालता। सहीह बुख़ारी की हदीस में आता है कि क़यामत के दिन उसके माल को एक ज़हरीले साँप बनाकर ज़ंजीर की तरह गले में डाल दिया जायेगा, वह साँप उस की बाँहें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, तेरा ख़ज़ाना हूँ।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿182﴾

१८२. यह तुम्हारे करतूत हैं और वेशक अल्लाह अपने वन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَاۗءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿183﴾

१८३. इन्होंने कहा कि हम से अल्लाह ने वादा लिया है कि हम किसी रसूल को न मानें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी क़ुर्बानी न लाये जिसे आग खा जाये, आप कहिये कि तुम्हारे पास मुझ से पहले रसूल दलायेल और उस के साथ वह भी लाये जो तुम ने कहा तो तुम ने उन्हें क्यों क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَاۗءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿184﴾

१८४. फिर भी अगर यह लोग आप को झुठलायें, तो आप से पहले बहुत से रसूल झुठलाये गये, जो अपने साथ स्पष्ट प्रमाण, (वाजेह दलायल) सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आये।[1]

كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿185﴾

१८५. हर जानदार को मौत का मज़ा चखना ही है और क़यामत के दिन तुम अपने बदले पूरे-पूरे दिये जाओगे, लेकिन जो इंसान आग से हटा दिया जाये और जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल करा दिया जाये, वेशक वह सफ़ल हो गया और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ धोखे का सामान है।[2]

---

[1] नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि आप यहूदियों की कटहुज्जती से उदास न हों, इस तरह का सुलूक सिर्फ़ आप के साथ नहीं किया जा रहा है, बल्कि आप से पहले आने वाले पैग़म्बरों के साथ भी यही किया जा चुका है।

[2] इस आयत में एक अटल हक़ीक़त का बयान है कि मौत से कोई भाग नहीं सकता। दूसरा यह कि दुनिया में जिस ने भी अच्छा या बुरा जो कुछ किया है, उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। तीसरा कामयाबी की हद बतायी गयी है कि हक़ीक़त में कामयाब वह है जिस ने दुनिया में रहकर अपने रब को खुश कर लिया जिसके नतीजे में वह जहन्नम से आज़ाद कर दिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। चौथा यह कि दुनिया की ज़िन्दगी धोखे का सामान है, जो उस से अपना दामन बचाकर निकल गया, वह नसीब वाला है और जो उस में फँस गया, नाकाम और बदनसीब है।

The Ummah Technology Mission

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۡ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (186)

१८६. बेशक तुम्हारे माल व जान में तुम्हारा इम्तेहान लिया जायेगा, और ज़रूर तुम्हें उन लोगों की जो तुम से पहले किताब दिये गये और मूर्तिपूजकों की बहुत सी दुख देने वाली बातें सुननी पड़ेगीं और अगर तुम सब्र करो और हुक्म को मानो, तो ज़रूर यह बहुत बड़े हिम्मत का काम है।[1]

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۡ فَنَبَذُوْهُ وَرَاۗءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ (187)

१८७. और जब अल्लाह (तआला) ने अहले किताब से वादा लिया कि तुम उसे सभी लोगों से ज़रूर बयान करोगे और उसे छिपाओगे नहीं, तो फिर भी उन लोगों ने उस वादा को पीठ पीछे डाल दिया और उसे बहुत कम दाम पर बेच डाला, उनकी यह तिजारत बहुत बुरी है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (188)

१८८. वह लोग जो अपने करतूतों पर खुश हैं और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी तारीफ़ की जाये, आप उन्हें अज़ाब से आज़ाद न समझिये, उन के लिए तो दर्दनाक अज़ाब हैं।

---

[1] अहले किताब से मुराद यहूदी और इसाई हैं, यह नबी ﷺ, इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़लत कलिमात अदा करते थे, यही हालत अरब के मूर्तिपूजकों की थी, इनके सिवाय मदीने में आने के बाद मुनाफ़िक़ ख़ास तौर से उनका मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय्य भी आप की मान-मर्यादा (इज़्ज़त-वक़ार) पर वार करता था, आप ﷺ के मदीना आने से पहले मदीनावासी उसे अपना सरदार बनाने वाले थे, और उसके ताज पहनाने की तैयारी पूरी हो चुकी थी कि आप ﷺ के आने से उसका यह ख़्वाब टूट गया, जिसका उसे बहुत दुख था, इसलिए प्रतिशोध (इंतिक़ाम) की भावना की वजह से वह आप के ख़िलाफ़ अपमान और निन्दा (मुज़म्मत) करने का कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता था (जैसाकि बुख़ारी के हवाले से इसका आवश्यक विवरण पिछले हाशिया में गुज़र चुका है)। इस हालत में मुसलमानों को माफ़ करने और सब्र करने की तालीम दी जा रही है, जिस से मालूम हुआ कि इस्लाम की दावत देने वालों को दुखों और तकलीफ़ों का होना इस सच्चे रास्ते में अटल परिस्थिति (हालात) में से है और इसका इलाज सब्र अल्लाह के दीन की मज़बूती के लिए अल्लाह की मदद की तमन्ना और अल्लाह की ओर लौटने के सिवाय कुछ भी नहीं। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿189﴾

१८९. और आसमानों व ज़मीन का मालिक अल्लाह (तआला) ही है और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿190﴾

१९०. बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और रात-दिन के हेर-फेर में यक़ीनन अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं।

الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿191﴾

१९१. जो अल्लाह (तआला) की याद खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं और आसमानों व ज़मीन की पैदाईश पर विचार करते हैं (और कहते हैं) कि हे हमारे रब! तूने यह सब विना फ़ायेदा के नही बनाया, तू पाक है, बस तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले।[1]

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿192﴾

१९२. ऐ हमारे पालनहार! तू जिसे आग में डाले बेशक तूने उसे अपमानित (ज़लील) किया और ज़ालिमों का मददगार कोई नहीं है।

رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۟ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿193﴾

१९३. हे हमारे रब! हम ने सुना कि एक पुकारने वाला ईमान की तरफ़ पुकार रहा है कि लोगो! अपने रब पर ईमान लाओ और हम ईमान लाये। हे हमारे रब! अब तो हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हमारी बुराईयाँ हम से दूर कर दे और हमारी मौत नेक लोगों के साथ कर।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ﴿194﴾

१९४. हे हमारे रब! हमें वह अता कर जिसका वादा तूने हम से अपने रसूलों के मुँह से किया है और हमें क़यामत के दिन रुस्वा न कर, बेशक तू वादा के ख़िलाफ़ नहीं करता।

---

[1] इन दस आतयों में से पहली आयत में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत व ताक़त के कुछ लक्षणों (नमूनों) की चर्चा की है और फ़रमाया कि यह निशानियाँ ज़रूर हैं लेकिन किन के लिए? अक़्लमंदों और आलिमों के लिए यानी इसका मतलब यह हुआ कि इन अजायबे क़ुदरत और उस के सामर्थ्य (क़ुदरत) को देखकर भी जिसे अल्लाह का इल्म (ज्ञान) न हो वह अक़्लमंद नहीं है।

The Ummah Technology Mission

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿195﴾

१९५. अत: उन के पालनहार ने उन की दुआ क़ुबूल की[1] कि तुम में से किसी अमल करने वाले के अमल को चाहे वह मर्द हो या औरत में कभी बेकार नहीं करता।[2] तुम आपस में एक-दूसरे से हो, इसलिए वह लोग जिन्होंने हिजरत (धर्म के कारण स्थानान्तरण) किया और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरी राह में तक़लीफ़ दी गई और जिन्होंने जिहाद किया और शहीद किये गये, ज़रूर मैं उनकी बुराईयाँ उन से दूर कर दूँगा और ज़रूर उन को उस जन्नत में ले जाऊँगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, यह है सवाब अल्लाह (तआला) की तरफ से और अल्लाह (तआला) ही के पास अच्छा बदला है।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿196﴾

१९६. नगरों में काफ़िरों का आना-जाना तुझे धोखे में न डाल दे।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۚ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿197﴾

१९७. यह तो बहुत ही थोड़ा फ़ायेदा है,[3] उस के बाद उनका ठिकाना तो जहन्नम है और वह बुरी जगह है।

---

[1] فاستجاب यहाँ استجاب यानी क़ुबूल किया के अर्थ (मायने) में इस्तेमाल हुआ है।

[2] मर्द हो या औरत का बयान इसलिये कर दिया गया है कि इस्लाम ने कुछ कामों में मर्द-औरत के बीच उन के एक-दूसरे से फ़ितरी इख़्तिलाफ़ और गुणों (सिफ़तों) के आधार पर जो अन्तर (फ़र्क़) किया है। जैसे विलायत और हाकमियत में, जीविका उपार्जन में जिहाद में भाग लेने में और विरासत में आधा हिस्सा मिलने में, इस से यह मतलब न निकाल लिया जाये कि सवाब के कामों के बदला में भी शायद मर्द-औरत में कुछ फ़र्क किया जायेगा, नहीं, ऐसा नहीं होगा। सब का बराबर बदला मिलेगा, वही सवाब अगर एक औरत करेगी तो उसको भी वही बदला मिलेगा।

[3] यह दुनिया के साधन, आराम और सहूलतें खुले तौर से चाहे जितने क़्यादा क्यों न हों, हक़ीक़त में थोड़ी सी सामग्री है क्योंकि आख़िर में उनको बरबाद होना है और उनकी तबाही से पहले वह लोग ख़ुद भी बरबाद हो जायेंगे, जो उन को हासिल करने की वजह से अल्लाह तआला को भी भूल जाते हैं और हर तरह के सामाजिक बन्धनों और अल्लाह की सीमाओं (हुदूद) का उल्लंघन (तजावुज़) करते हैं।

The Ummah Technology Mission

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿198﴾

१९८. लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए जन्नत हैं, जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, उन में वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह की ओर से मेहमान नवाज़ी है, और सवाब का काम करने वालों के लिए अल्लाह (तआला) के पास जो कुछ भी है वह सब से बेहतर और अच्छा है।[1]

وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿199﴾

१९९. और ज़रूर अहले किताब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो अल्लाह (तआला) पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी तरफ़ जो उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया उस पर भी। अल्लाह तआला से डर के रहते हैं, और अल्लाह (तआला) की आयतों को छोटे-छोटे दामों पर नहीं बेचते,[2] उनका बदला उन के रब के पास है। बेशक अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब लेने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿200﴾

२००. ऐ ईमानवालो! तुम सब्र (धैर्य) करो, और एक-दूसरे को थामे रखो और जिहाद (धर्मयुद्ध) के लिए तैयार रहो ताकि तुम कामयाबी को पहुँचो।

---

[1] उन के ख़िलाफ़ जो परहेज़गारी और अल्लाह के डर से ज़िन्दगी गुज़ार के अल्लाह के घर में हाज़िर होंगे, अगरचे उन के पास अल्लाह को भूल जाने वालों की तरह माल की ज़्यादती और दौलत उस तरह उपलब्ध (हासिल) न होंगी, लेकिन वह अल्लाह के मेहमान होंगे जो तमाम कायनात का मालिक है, और वहाँ उन को जो बदला मिलेगा, वह उस से ज़्यादा होगा जो दुनिया में काफ़िरों को सामायिक रूप (वक़्ती तौर) से हासिल हुआ था।

[2] इस आयत में अहले किताब के उस गिरोह का बयान है, जिन्हें रसूल करीम ﷺ की रिसालत पर ईमान लाने की खुशनसीबी हासिल हुई, उन के ईमान और ईमान के गुणों (सिफ़तों) का बयान करके अल्लाह तआला ने दूसरे अहले किताब से उन्हें बेहतर कर दिया।

The Ummah Technology Mission

सूरतुन निसा-४

سُوْرَةُ النِّسَآءِ

सूर: निसा[1] मदीना में उतरी और इस में एक सौ छिहत्तर आयतें और चौवीस रूकूउ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हे लोगो! अपने उस पालनहार से डरो जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया और उसी से उसकी वीवी को पैदा किया[2] और दोनों से वहुत से मर्द-औरत फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिस के नाम पर एक-दूसरे से मांगते हो और रिश्ता तोड़ने[3] से (भी वचो), वेशक अल्लाह तुम पर संरक्षक (निगहवां) है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ①

---

[1] **सूरतुन निसा-**

निसा का मतलब "औरतें" है, इस सूर: में औरतों के बहुत से मसले का वयान है, इसलिए इसे सूर: निसा कहा जाता है।

[2] "एक जान" से मतलव इंसानों के परम पिता हजरत आदम ﷺ हैं, और ﴿وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا﴾ में مِنْهَا से "वही जीव" यानी आदम और उन से उनकी वीवी हजरत हौवा को पैदा किया, हजरत हौवा हजरत आदम से किस तरह पैदा हुईं, इस में इख़्तिलाफ़ है। हजरत इब्ने अव्वास के क़ौल के हिसाव से हजरत हौवा मर्द (यानी आदम) से पैदा हुईं यानी उनकी वायीं पसली से, एक हदीस में भी कहा गया है।

«إِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ وَإِنْ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلَاهُ»

(सहीह बुख़ारी, किताव वदऊल ख़ल्क़, सहीह मुस्लिम, किताबुल रिदाओं)

"औरत पसली से पैदा की गयी है और पसली में सव से टेढ़ी ऊपरी है, अगर तू उसे सीधा करना चाहे तो तोड़ बैठेगा और अगर तू उस से फ़ायेदा उठाना चाहे, टेढ़ेपन से ही फ़ायेदा उठा सकता है।"

[3] والأرحام का मतलव है रिश्तों को तोड़ने से वचो। رحم-أرحام का बहुवचन (जमा) है, मतलव रिश्ता है, जो मां के गर्भ के आधार पर वनते हैं इस से शादी के लायक़ और शादी के लायक़ नहीं (क़रीवी रिश्तेदार) दोनों रिश्ता मुराद है, रिश्तों का तोड़ना वहुत वड़ा गुनाह है। हदीस में क़रीवी रिश्तेदारों को हर हालत में रिश्ता जोड़ने और उन के हुक़ूक़ को अदा करने पर ख़ास ज़ोर दिया गया है, जिसे रिश्ता जोड़ना कहा जाता है।

The Ummah Technology Mission

وَ اٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ
بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿2﴾

२. और यतीमों को उन का माल दे दो और पाक के बदले नापाक न लो और अपने माल में मिलाकर उनका माल न खाओ, बेशक यह बड़ा गुनाह है।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا
مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ
فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ﴿3﴾

३. और अगर तुम्हें डर हो कि यतीम लड़कियों से शादी करके तुम इंसाफ़ न कर सकोगे तो और औरतों में जो तुम्हें अच्छी लगें तुम उन से शादी कर लो, दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, लेकिन अगर अदल न रखने का डर है तो एक ही काफ़ी है या तुम्हारी मिल्कियत की दासियाँ यह ज़्यादा क़रीब है कि (ऐसा करने से नाइंसाफ़ी और) एक ओर झुक जाने से बचो।[1]

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ
عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ﴿4﴾

४. और औरतों को उन के महर (जो राशि विवाह के लिए मान्य हो) मर्ज़ी से दे दो, और अगर वह ख़ुद अपनी मर्ज़ी से कुछ महर छोड़ दें तो उसे अपनी मर्ज़ी से खाओ पिओ।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ
قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿5﴾

५. और बेअक़्लों को अपना माल जिसे अल्लाह ने तुम्हारा सहारा बनाया है न दो और उन में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उन से नर्म बात बोलो।

---

[1] यानी एक ही औरत से शादी करने में भलाई है, क्योंकि एक से ज़्यादा बीवियाँ रखने की हालत में सभी के साथ इंसाफ़ करना मुश्किल है, जिसकी तरफ़ दिली मुहब्बत ज़्यादा होगी उसी की तरफ़ जीवन-सामग्री उपलब्ध (मुहय्या) करने में ज़्यादा ध्यान होगा, इस तरह बीवियों के बीच इंसाफ़ करने में नाकाम होगा और अल्लाह के यहाँ गुनहगार होगा, क़ुरआन ने इस हक़ीक़त को दूसरी जगह पर बहुत वाज़ेह तौर से इस तरह बयान किया है।

﴿وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ﴾

"और तुम कभी भी इस बात की ताक़त न रखोगे कि बीवियों के बीच इंसाफ़ रख सको, अगरचे तुम ख़्वाहिश रखो (तो यह ज़रूर करो) कि एक तरफ़ न झुक जाओ और दूसरी बीवियों को बीच पर लटका दो।" (सूरः निसा-१२९)

इस से मालूम हुआ कि एक से ज़्यादा शादियाँ और बीवियों के साथ इंसाफ़ न करना ग़लत है और बहुत भयानक भी।

The Ummah Technology Mission

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ
اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ
وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ
غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ
بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ
فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ⑥

६. और यतीमों को उनके बालिग़ हो जाने तक सुधारते और आज़माईश करते रहो, फिर अगर तुम उन में सुधार देखो तो उन्हें उन के माल सौंप दो, और उन के बड़े हो जाने के डर से उन के माल को जल्दी-जल्दी फ़ुज़ूल ख़र्चों से न खाओ, धनवानों को चाहिए कि उन के माल से बचते रहें, अगर ग़रीब हों तो नियमानुसार खा लो, फिर जब उन्हें उन के माल सौंपो तो गवाह बना लो, और लेखा-जोखा के लिये अल्लाह काफ़ी है।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠
وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ
مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ⑦

७. माता-पिता और क़रीबी रिश्तेदारों की सम्पत्ति में मर्दों का हिस्सा है और औरतों का भी (जो धन-सम्पत्ति माँ-बाप और क़रीबी रिश्तेदार छोड़ कर मरें) चाहे वह धन कम हो या ज़्यादा (उसमें) हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है।[1]

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ⑧

८. और जब बँटवारे के वक़्त रिश्तेदार, यतीम और ग़रीब आ जायें, तो तुम उस में से थोड़ा बहुत उन्हें भी दे दो और उन से नर्मी से बोलो।[2]

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً
ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا
قَوْلًا سَدِيْدًا ⑨

९. और चाहिए कि वह इस बात से डरें कि अगर वह अपने पीछे (नन्हे-नन्हें) कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते, जिनके ख़राब हो जाने का डर रहता है (तो उन की मुहब्बत क्या होती), तो बस अल्लाह तआला से डर कर दुरुस्त बात कहा करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا
يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ⑩ ع

१०. जो लोग नाहक़ ज़ुल्म से यतीमों का माल खा जाते हैं, वह अपने पेट में आग ही भर रहे है और वह जहन्नम में जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

[1] इस्लाम से पहले यह भी ज़ुल्म था कि औरतों और छोटे बच्चों को उत्तराधिकार (वारिस) के रूप में कुछ भी भाग नहीं दिया जाता था, सिर्फ़ बड़े लड़के जो लड़ने के लायक़ होते थे, वही सारी सम्पत्ति (जायदाद) के उत्तराधिकारी माने जाते थे, इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मर्दों की तरह औरतें, और बच्चे-बच्चियाँ भी अपने माँ-बाप और रिश्तेदारों के उत्तराधिकारी होंगी उन्हें महरूम नहीं किया जायेगा।

[2] इसे कुछ आलिमों ने उत्तराधिकार (विरासत) की आयत से मंसूख़ कहा है, लेकिन ठीक बात यह है कि यह मंसूख़ का हुक्म नहीं है, बल्कि एक ख़ास अख़लाक़ी हिदायत है कि मदद के लायक़ रिश्तेदार जिनका विरासत में कोई हिस्सा न हो, उन्हें भी बँटवारे के वक़्त कुछ दे दो, इस के सिवाय उन से प्यार से नर्म बात कहो, माल को आते देख कर क़ारून और फ़िरऔन न बनो।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ
ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ
إِن كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ
أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِن كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ

११. अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है,[1] अगर सिर्फ़ लड़कियाँ हों और दो से ज़्यादा हों, तो उन्हें मिरास के माल में से दो तिहाई मिलेगा,[2] और अगर एक ही लड़की हो तो उस के लिए आधा है और मरने वाले के माँ-बाप में से हर के लिए उस के छोड़े हुये माल का छठाँ भाग है, अगर उस (मृतक) की औलाद हो,[3] अगर औलाद न हो, और माँ-बाप वारिस हों तो फिर उसकी माँ के लिए तीसरा हिस्सा है,[4] हाँ,

---

[1] इस की हिक्मत और इंसाफ़ वाला होने का बयान हम पहले कर आये हैं, वारिस लड़का और लड़की दोनों हों तो फिर इस उसूल के अनुसार बटवारा होगा, लड़का और लड़की छोटे हों या बड़े सब वारिस होंगे, यहाँ तक कि पेट का बच्चा भी वारिस होगा, हाँ काफ़िर औलाद वारिस नहीं होगी।

[2] यानी लड़का न हो तो माल का दो तिहाई (२/३) दो से ज़्यादा लड़कियों को दिये जायेंगे और अगर दो ही लड़कियाँ हों तो भी उन्हें दो तिहाई (२/३) हिस्सा दिया जायेगा, जैसाकि हदीस में आता है कि साद बिन रबीअ "ओहद" मे शहीद हो गये, उनकी दो लड़कियाँ थीं, लेकिन साद के पूरे माल पर उन के एक भाई ने क़ब्ज़ा कर लिया, तो नबी ﷺ ने उन के चचा से दो तिहाई (२/३) उनको दिलाया (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, किताबुल फ़राईद) इस के सिवाये सूरः निसा के आख़िर में बताया गया है कि अगर मरने वाले की वारिस दो बहनें हों तो दो तिहाई (२/३) माल की वारिस होंगी तो फिर दो लड़कियाँ दो तिहाई (२\३) माल की ज़्यादा वारिस होंगी, जिस तरह दो बहनों से ज़्यादा होने की हालत में उन्हें दो से ज़्यादा लड़कियों के क़ानून के अनुसार रख गया है। (फ़तहुल क़दीर) सारांश (ख़ुलासा) यह हुआ कि दो या दो से ज़्यादा लड़कियाँ हों तो तरका (छोड़े माल) में दो तिहाई लड़कियों का हिस्सा होगा, बाक़ी माल असबा (वह वारिस जिस का हिस्सा मुक़र्रर नहीं है) में बटवारा होगा।

[3] माँ-बाप के हिस्सा की तीन हालतें बयान की गई हैं, पहला यह कि मरने वाले की औलाद हों तो माँ-बाप हर एक को सिर्फ़ छठवाँ (१/६) हिस्सा मिलेगा, बाक़ी दो तिहाई माल औलाद में बँटवारा होगा, हाँ अगर मरने वाले की औलाद में एक लड़की हो तो उसमें से सिर्फ़ आधा माल (यानी छः हिस्सों में से तीन हिस्सा) लड़की के होंगे और छठाँ हिस्सा (१/६) माँ को या १/६ बाप को देने बाद (१/६) बाक़ी रह जायेगा और यह बाक़ी (१/६) असबा होकर बाप के हिस्सा में जायेगा, यानी उसे दो (१/६) मिलेगा, एक बाप के रूप में दूसरा अस्बा के रूप में।

[4] यह दूसरी हालत है कि मरने वाले की औलाद नहीं है (याद रहे कि पौता-पौती औलाद में सर्वसम्मति से शामिल हैं) इस हालत में माँ के लिये तीसरा हिस्सा (१/३) और बाक़ी दो हिस्सा (२/३) बाप को अस्बा के तौर पर मिलेगे, और अगर माँ-बाप के साथ मरने वाले की बीवी या मरने वाली औरत का शौहर भी ज़िन्दा हो तो बेहतर है कि शौहर या बीवी का हिस्सा (जिसकी

The Ummah Technology Mission

السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾

अगर मरने वाले के कई भाई हों तो फिर उसकी माँ का छठाँ हिस्सा है,[1] यह हिस्सा उस वसीयत (की तकमील) के बाद है जो मरने वाला कर गया हो या क़र्ज़ अदा करने के बाद तुम्हारे पिता हों, या तुम्हारी औलाद तुम्हें नहीं मालूम कि उन में से कौन तुम्हें फ़ायेदा पहुँचाने में ज़्यादा क़रीब है,[2] यह हिस्सा अल्लाह (तआला) की तरफ़ से मुक़र्रर किये हुए हैं, बेशक अल्लाह तआला जानने वाला हिक्मत वाला है।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ

१२. और तुम्हारी बीवियाँ जो कुछ छोड़ कर मरें और उनकी औलाद न हो तो आधा तुम्हारा है और अगर उनकी औलाद हो तो उन के छोड़े हुए माल में से तुम्हारे लिए चौथाई है[3] उस वसीयत को अदा करने के बाद जो वह कर गयी हों या क़र्ज़ को अदा करने के बाद और जो (तरका) तुम छोड़ जाओ उस में से उन के लिए

तफ़सील आगे आ रही है) निकाल कर बाक़ी माल में से माँ के लिये एक तिहाई (१/३) और बाक़ी (२/३) बाप का होगा।

[1] तीसरी हालत यह है कि मरने वाले के भाई-बहिन ज़िन्दा हों तो वे भाई-बहिन सगे (ऐनी) यानी एक ही माँ-बाप की औलाद हो, या अल्लाती यानी बाप एक माँ कई हों, या बाप कई माँ एक हो यानी अख़्याफ़ी भाई-बहिन हों, अगरचे ये भाई-बहिन मरने वाले के बाप के रहते मीरास के हक़दार नहीं होंगे, लेकिन माँ के लिये "हजब" हिस्सा कम करने की वजह बन जायेंगे, यानी अगर एक से ज़्यादा होंगे तो माँ के तिहाई भाग (१/३) को छठवें हिस्सा (१/६) में बदल देंगे, बाक़ी पूरा माल (५/६) बाप के हिस्सा में चला जायेगा, लेकिन कोई अन्य वारिस न हो तब, हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि जम्हूर के क़रीब दो भाई का वही क़ानून है जो दो से ज़्यादा का बयान हुआ है, इस का मतलब यह हुआ कि अगर एक भाई-बहिन हो तो माँ का तिहाई हिस्सा रह जायेगा, वह (१/६) में परिवर्तित (तब्दील) नहीं होगा। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] अत: तुम अपनी अक़्ल के अनुसार विरासत का बटवारा न करो, बल्कि अल्लाह के हुक्म के ऐतबार से जिसका जितना हिस्सा मुक़र्रर है वह उन्हें दो।

[3] औलाद के न होने की हालत में लड़के की औलाद यानी पौता भी औलाद के बराबर है, इस पर उम्मत मुसलेमा की रज़ामंदी है, (फ़तहुल क़दीर और इब्ने कसीर) इसी तरह मरने वाले शौहर की औलाद चाहे वह उसकी वर्तमान (मौजूदा) पत्नी से हो या किसी दूसरी बीवी से, इसी तरह मरने वाली बीवी की औलाद चाहे उस के मौजूदा पति से हो या पहले के किसी शौहर से।

The Ummah Technology Mission

فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ
كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗۤ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ
شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿12﴾

चौथाई है, अगर तुम्हारी औलाद न हो, और अगर तुम्हारी औलाद हो तो फिर उन्हें तुम्हारे छोड़े हुए माल में से आठवाँ हिस्सा मिलेगा,[1] उस वसीयत के बाद जो तुम कर गये हो और क़र्ज़ को अदा करने के बाद, और जिनकी मीरास ली जाती है, वह मर्द या औरत कलाल: हो (यानी उसका बाप या लड़का न हो) और उस का एक भाई या एक बहन हो,[2] तो उन में से हर एक का छठाँ हिस्सा है, और उस से ज़्यादा हो तो एक तिहाई में सभी शामिल हैं,[3] उस वसीयत के बाद जो की गयी हो और क़र्ज़ के अदा होने के बाद जबकि दूसरों को नुक़सान न पहुँचाई गयी हो,[4] यह मुक़र्रर किया हुआ अल्लाह (तआला) की तरफ़ से है और अल्लाह (तआला) हर बात का जानने वाला और सहनशील है।

---

[1] बीवी अगर एक हो या कई हों, चौथा या आठवाँ हिस्सा मिलेगा यही हिस्सा उन में बटवारा होगा, हर एक को चौथाई (१/४) या आठवाँ (१/८) हिस्सा नहीं मिलेगा, यह सर्वसम्मति नियम (मसअला) है।

[2] इस से मुराद माँ जाये भाई-बहिन हैं, यानी जिनकी माँ एक हो बाप अलग-अलग, क्योंकि सगे भाई-बहिन या अल्लाती (कई माँ और एक बाप से) भाई-बहन का हिस्सा मीरास में इस तरह नहीं है, और इस का बयान इसी सूर: में आख़िर में आ रहा है, और यह मसअला भी सर्वसम्मति से है। (फ़तहुल क़दीर) हक़ीक़त में वंश के लिये (للذكر مثل حظ الانثيين) का क़ानून चलता है, यही वजह है कि लड़के-लड़कियों के लिये यहाँ और बहन-भाईयों के लिए इस सूर: की आख़िरी आयत हर दो में यही क़ानून है, लेकिन माँ की औलाद में चूँकि वंशज (नसली) हिस्सा नहीं होता इसलिये वहाँ हर भाई-बहन को बराबर हिस्सा दिया जाता है, जो भी हालत हो एक भाई को या एक बहन को हर को छठवाँ (१/६) हिस्सा मिलेगा।

[3] एक से ज़्यादा होने पर यह सब एक तिहाई (१/३) हिस्सा में साझी होंगे, मर्द-औरत में कोई फ़र्क नहीं किया जायेगा, बिना फ़र्क सभी को बराबर हिस्सा मिलेगा, मर्द हों या औरत।

[4] इस तरह की वसीयत के ज़रिये किसी वारिस को महरूम कर दिया जाये, या किसी का हिस्सा घटा दिया जाये, या यूँ हीं वारिसों को नुक़सान पहुँचाने के लिये कह दे कि फ़लाँ इंसान से मैंने इतना क़र्ज़ लिया है जब कि कुछ भी न लिया हो, मानो नुक़सान पहुँचाने का संबन्ध उत्तराधिकार (विरासत) और क़र्ज़ दोनों से है, और दोनों के ज़रिये नुक़सान पहुँचाना मना और गुनाह है और ऐसी वसीयत भी अनृत (बातिल) होगी।

The Ummah Technology Mission

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿13﴾

१३. यह हुदूद अल्लाह तआला के मुक़र्रर किये हैं और जो अल्लाह (तआला) और उस के रसूल (ﷺ) के हुक्म को बजा लायेगा उसे अल्लाह (तआला) जन्नत में ले जायेगा, जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, जिन में वह हमेशा रहेंगे और यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿14﴾ ع

१४. और जो इंसान अल्लाह (तआला) की और रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी करे और उसकी मुक़र्रर हुदूद को लाँघ जाये, उसे वह जहन्नम में डाल देगा, जिस में वह हमेशा रहेगा, ऐसों के लिए ही रुस्वा करने वाला अज़ाब है।

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿15﴾

१५. तुम्हारी औरतों में से जो ज़िना का काम करें, उन पर अपने में से चार गवाह तलब करो, अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घर में बन्दी बना दो, यहाँ तक कि मौत उनकी उम्र को पूरा कर दे,[1] या अल्लाह तआला उन के लिए कोई दूसरा रास्ता निकाले।[2]

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿16﴾

१६. और तुम में से जो दो इंसान ऐसा काम कर लें[3] उन्हें तक़लीफ़ दो,[4] अगर वह माफ़ी माँग लें और सुधार कर लें, तो उन से मुँह फेर लो। बेशक अल्लाह तआला तौबा क़ुबूल करने वाला और रहम करने वाला है।

---

[1] यह ज़िना औरतों की वह सज़ा है जो इस्लाम के शुरूआती दौर में जब ज़िना की सज़ा मुक़र्रर नहीं हुई थी, सामायिक (वक़्ती) रूप से मुक़र्रर की गई थी।

[2] इस से ज़िना की वह सज़ा मुराद है जो बाद में मुक़र्रर की गई, यानी शादी शुदा जानी मर्द-औरत के लिये रजम यानी पत्थरों से मार डालना और ग़ैर शादी शुदा जानी मर्द-औरत के लिये सौ-सौ कोड़े की सज़ा, जिसकी तफ़सीर सूर: नूर और सहीह हदीसों में बयान है।

[3] कुछ ने इस से बाल मैथुन (लितावत) मायेना लिया है, यानी दो मर्दों का आपसी संभोग और कुछ ने इस से कुँआरे मर्द-औरत मतलब लिया है, और इस से पहले की आयत को शादी शुदा के साथ ख़ास किया है और कुछ ने इस क़ौल से मुराद मर्द-औरत लिया है वह कुंआरे हों या शादी शुदा। इब्ने जरीर ने दूसरे मायने को प्रधानता दी है और पहली आयत में बयान सज़ा को सूर: नूर में बयान सज़ा से मंसूख़ माना है। (तफ़सीर तबरी)

[4] यानी मुँह से डाँटना, फटकारना और धिक्कारना या हाथ से कुछ मार पीट देना और अब यह मंसूख़ है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾

१७. अल्लाह तआला केवल उन्हीं लोगों की तौबा (क्षमा) स्वीकार (क़ुबूल) करता है जो अंजान होने के कारण बुराई करें और जल्द ही उस से रुक जायें और माफ़ी मागें तो अल्लाह (तआला) भी उनकी तौबा क़ुबूल करता है। अल्लाह (तआला) बड़ा ज्ञानी बुद्धिमान है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٨﴾

१८. और उनकी तौबा क़ुबूल नहीं, जो बुराईयाँ करते चले जायें यहाँ तक कि उन में से किसी की मौत क़रीब आ जाये, तो कह दें कि मैंने अब माफ़ी माँगी[1] उनकी माफ़ी भी क़ुबूल नहीं होती जो कुफ़्र की हालत में मर जायें, यही लोग हैं जिन के लिए हम ने सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَن يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾

१९. ऐ ईमानवालो! तुम्हारे लिये मना है कि ज़बरदस्ती औरतों को वारिस के रूप में ले बैठो,[2] उन्हें इसलिए न रोक रखो कि जो तुम ने उन्हें दे रखा है उस में से कुछ ले लो। हाँ, यह और बात है कि वह कोई खुली बुराई और ज़िना का व्यवहार (सुलूक) करें[3] उन के साथ अच्छा सुलूक करो, अगरचे कि तुम उन्हें पसन्द न करो लेकिन बहुत मुमकिन है कि तुम एक चीज़ को

---

[1] इससे वाज़ेह है कि मौत के वक़्त की तौबा क़ुबूल नहीं है, जैसा कि हदीस में भी आता है जिसका बयान आले इमरान की आयत ९ में गुज़र हो चुका।

[2] इस्लाम से पहले औरत पर यह ज़ुल्म भी होता था कि किसी के मरने के बाद उस के घर के लोग उस के माल की तरह उसकी बीवी के भी ज़बरदस्ती वारिस बन जाते थे, और ख़ुद अपनी मर्ज़ी से उसकी ख़ुशी के बिना उस से शादी कर लेते, या अपने भाई, भतीजे से उसकी शादी कर देते, यहाँ तक की सौतेला लड़का अपने मरहूम बाप की बीवी से शादी कर लेता, या अगर चाहते तो उसे किसी से शादी करने की इजाज़त न देते और वह पूरी उम्र यूँ ही गुज़ारा करने के लिये मजबूर होती, इस्लाम ने ज़ुल्म के इन सभी तरीक़ों को हराम कर दिया।

[3] खुली बुराई से मुराद ज़िना या बदज़ुबानी और नाफ़रमानी है, इन दोनों ही हालत में शौहर को यह इजाज़त दी गई है कि उस के साथ ऐसा सुलूक करे कि वह उसका दिया हुआ माल या महर वापस करके ख़ुलाअ कराने पर मजबूर हो जाये। (जैसाकि ख़ुलाअ में शौहर को महर वापस लेने का हक़ दिया गया है।) (देखिये सूर: बक़र:-२२९)

The Ummah Technology Mission

वुरा जानो, और अल्लाह (तआला) उस में वहुत सी भलाई कर दें।[1]

وَإِنْ أَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ
وَّآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ
شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا (20)

२०. और अगर तुम एक वीवी की जगह पर दूसरी वीवी करना ही चाहो और उन में से किसी को तुम ने माल का ख़जाना दे रखा हो तो भी उस में से कुछ न लो,[2] क्या तुम उसे वदनाम करके खुले गुनाह से ले लोगे।

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
وَّأَخَذْنَ مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا (21)

२१. और तुम उसे कैसे ले लोगे? वावजूद इस के कि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो[3] और उन औरतों ने तुम से मजवूत वादा ले रखा है।[4]

وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا
مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۖ
وَّسَاءَ سَبِيلًا (22)

२२. और उन औरतों से शादी न करो, जिनसे तुम्हारे वापों ने शादी किया हो[5] लेकिन जो हो चुका, यह वेशर्मी का काम और कीना की वजह से हैं और वड़ा वुरा रास्ता है।

---

[1] यह वीवी के साथ अच्छे सुलूक का वह हुक्म है जिस पर क़ुरआन ने वहुत जोर दिया है, और हदीस में भी नवी ﷺ ने इस को वहुत महत्व (अहमियत) दिया है, एक हदीस में आयत के उसी अर्थ (मायने) को वयान किया गया है।

[2] ख़ुद तलाक़ देने की हालत में महर वापस लेने को सख़्ती से रोक दिया गया है, قِنطَار माल का ख़जाना और वहुत ज़्यादा माल को कहते हैं, यानी कितना भी महर दे दिया हो वापस नहीं ले सकते, अगर ऐस करोगे तो यह ज़ुल्म वाज़ेह गुनाह होगा।

[3] एक-दूसरे से मिल चुके हो का मायने सहवास (जिमाअ) है, जिसे अल्लाह तआला ने इशारा के रूप में वयान किया है।

[4] मजवूत वादा से उस वादे का मतलव है जो शादी के वक़्त मर्द से लिया जाता है कि तुम इसे अच्छी तरह से रखना या नर्मी के साथ छोड़ देना।

[5] अज्ञान युग (जमाना जाहिलियत) में सौतेला लड़का अपने वाप की वीवी से शादी कर लेता था, उस से रोका जा रहा है कि यह वड़ी वेशर्मी का काम है। ﴿وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم﴾ आम हुक्म है जो ऐसी औरत से शादी को भी वर्जित (मम्नूअ) एलान कर रहा है, जिस से उस के वाप ने शादी किया, किन्तु समागम (दुख़ूल) से पहले तलाक़ दे दिया, यह वात हजरत इब्ने अव्वास से सावित है, और धर्म विशेषज्ञ (उलमा) इसी को मानते हैं। (तफ़सीर तवरी)

The Ummah Technology Mission

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَأَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْأَخِ وَبَنٰتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيٓ أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِي فِي حُجُورِكُمْ مِّن نِّسَآئِكُمُ الّٰتِي دَخَلْتُم بِهِنَّ

२३. तुम पर हराम की गयीं[1] तुम्हारी मायें, तुम्हारी बेटियां, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियां, तुम्हारी ख़ालायें, भाई की बेटियां, बहन की बेटियां और तुम्हारी वह मायें जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो। और तुम्हारी दूध में भागीदार बहनें, तुम्हारी सास और तुम्हारी वह पालन-पोषण की गयीं लड़कियां जो तुम्हारी गोद में हैं, तुम्हारी उन औरतों से जिन से तुम जिमाअ

---

[1] जिन औरतों से शादी हराम है उनकी तफ़सील दी जा रही है, इन में सात मुहर्रमात नसब से हैं, सात दुग्ध कर्म (रदाअत) से और चार ससुराली, इन के सिवा हदीस से साबित है कि भतीजी, फूफी, भांजी और ख़ाला को एक साथ शादी करके रखना हराम है।

सात वंशज निषेधित (नसबी हराम) औरतें हैं। मायें, बेटियां, बहनें, फूफियां, ख़ालायें, भतीजी और भांजी, रदाअत (दुग्धकर्म) से निषेधित (हराम) सात, रदाअत से मां, उसकी बेटियां, बहनें, फूफियां, ख़ालायें। रदाअत से भतीजियां और भांजियां हैं। ससुराली निषेधित स्त्रियां (मुहर्रमात) सास, संभोगित पत्नी की पहले शौहर से बेटियां, बहुयें और दो सगी बहनों को एक साथ शादी करके रखना, इनके सिवा बाप की बीवी जिसकी चर्चा इस से पहले की आयत में हो चुकी है। हदीस के मुताबिक़ औरत जब तक विवाह (निकाह) में है, उसकी फूफी, ख़ाला, उसकी भतीजी और भांजी से भी विवाह वर्जित है, वंशज निषेधित स्त्रीयों की सूची में मां की मां (नानियां) उनकी दादियां, और बाप की मायें नीचे तक शामिल हैं, जिना से पैदा हुई बेटी, बेटी है या नहीं, इस में एख़्तिलाफ़ है, तीनों इमाम उसे बेटी मानते हैं और उस से शादी हराम समझते हैं। इमाम शाफ़ई कहते हैं कि वह शरीअत के अनुसार बेटी नहीं, इसलिए वह जिस तरह ﴿يُوصِيكُمُ اللهُ فِي أَوْلَادِكُمْ﴾ (अल्लाह तुम्हें औलाद में त्यक्त धन (तरका) बटवारा करने का हुक्म देता है) के अन्तर्गत नहीं और सर्वसम्मति से वारिस नहीं। इसी तरह इस आयत के भी अन्तर्गत नहीं। واللہ اعلم "बहनें" सगी हों या मां से या बाप से। "फूफियां" में बाप की और सभी मूल पुरुष (यानी नाना, दादा) की तीनों तरह की बहनें आती हैं। "ख़ालायें" इस के अन्तर्गत मां की और सभी मूल स्त्री (यानी दादी, नानी) की तीनों तरह की बहनें आती हैं। "भतीजियों" में तीनों तरह के भाईयों की औलाद सीधे हों या वास्ता से। ऐसे ही "भांजियों" में तीनों तरह की बहनों की औलाद ख़ुद उनकी हों या उनकी औलाद की औलाद शामिल हैं।

दूसरी तरह रदाअत से निषेधित औरतें। दूध पिलाने वाली मां, जिसका दूध, दूध पीने की मुद्दत में पिया हो। (यानी दो साल के भीतर) दूध से बहन जिसे तुम्हारी सगी मां या दूध पिलाने वाली मां ने दूध पिलाया, तुम्हारे साथ पिलाया या तुम से पहले या बाद तुम्हारे दूसरे भाई-बहन के साथ पिलाया या जिस औरत की सगी मां या दूध वाली मां ने तुम्हें दूध पिलाया, चाहे कई वक़्त

The Ummah Technology Mission

فَإِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿23﴾

कर चुके हो। हाँ, अगर तुम ने उन से जिमाअ न किया हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे अपने सगे बेटों की बीवियाँ और तुम्हारा दो सगी बहनों को एक साथ शादी करना। हाँ, जो हो चुका सो हो चुका, बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला मेहरबान रहम करने वाला है।

में पिलाया हो, दूध से भी वह सभी रिश्ते वर्जित (हराम) हो जायेंगे जो वंश से वर्जित होते हैं, इसकी तफ़सील यह है कि दूध पिलाने वाली माँ की ख़ुद अपनी औलाद, और जिनको दूध पिलाया है, दूध पीने वाले बच्चे के भाई-बहन, दूध पिलाने वाली माँ का शौहर, उसका बाप और उस मर्द की बहनें, उसकी फूफियाँ, उस औरत की बहनें, ख़ालायें, उस औरत के जेठ, देवर उस के चचा, ताया बन जायेंगे, और इस दूध पीने वाले बच्चे के सगे भाई-बहन आदि इस घराने पर दूध पीने की वजह से वर्जित न होंगे।

तीसरी क़िस्म, ससुराली हराम की हुई स्त्रियाँ (मुहर्रमात) बीवी की माँ यानी सास (बीवी की नानी, दादी भी इस में शामिल है) और किसी ने औरत से शादी करके बिना जिमाअ कि तलाक दे दिया, तब भी उसकी माँ (सास) से विवाह हराम होगा, किन्तु किसी औरत से शादी कर के बिना हमबिस्तरी "तलाक़" दे दी हो तो उसकी बेटी से उसकी शादी जायेज होगी। (फतहुल क़दीर)

रबीब: बीवी की पहले शौहर से बेटी इसका हराम होना मशरूत है, यानी उसकी माँ से जिमाअ कर लिया होगा तो, "रबीबा" से विवाह हराम नहीं तो हलाल होगा, في حجوركم (वह रबीब: जिनका पालन, पोषण तुम्हारी गोद में हुआ) यह बंधन आम हालत की वजह से है, शर्त के रूप में नहीं, अगर वह बेटी किसी दूसरी जगह में पाली जायेगी या रहेगी, तब भी शादी वर्जित होगी, बीवी को हलील: कहा जाता है, क्योंकि अरबी में उसका मतलब उतरने की जगह है और बीवी शौहर के साथ रहती और जाती है, बेटों में पौते और नवासे भी आते हैं, यानी उनकी बीवियों से भी शादी वर्जित होगी, इसी तरह दूध पिलाई औलाद के जोड़े भी हराम होंगे من اصلابكم (तुम्हारे सगे बेटों की बीवियाँ) के बन्धन से यह वाज़ेह हो गया कि लेपालक की बीवियों से शादी नाजायज़ नहीं, दो बहनें सगी हों या दूध की उन से एक वक़्त में विवाह हराम है, लेकिन एक के मरने या तलाक़ की हालत में इद्दत पूरी होने के बाद दूसरी से विवाह जायेज़ है। इसी तरह चार बीवियों में से एक को तलाक़ देने के बाद पाँचवीं से शादी की इजाज़त नहीं, जब तक तलाक़ शुदा औरत इद्दत न पूरी कर ले।

The Ummah Technology Mission